अध्याय

04

आत्मकथ्य

कवि जयशंकर प्रसाद

© JSERT not to be republished

कवि- परिचय

1. जीवन -परिचय

1. बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी (उ.प्र .)के एक प्रतिष्ठित परिवार में 1889 ई .में हुआ था।
2. बचपन में ही पिता के निधन से पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोझ इनके कधों पर आ गया।
3. शिक्षा -प्रसाद जी की औपचारिक शिक्षा केवल 8 वीं कक्षा तक ही हो पायी । स्वाध्याय से उन्होंने अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, हिंदी व संस्कृत भाषाओं का अध्ययन किया।
4. मृत्यु — सन् 1937 ई

2.साहित्यिक- परिचय

1. बचपन से ही इनकी रुचि साहित्य की ओर थी। 'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका का इन्होंने सम्पादन किया। साहित्य जगत् में इन्हें वहीं से पहचान मिली।
2. प्रेम,समर्पण,कर्तव्य एवं बलिदान की भावना से ओतप्रोत उनकी कहानियाँ पाठकों को अभिभूत कर देती है।
3. प्रसाद हिंदी साहित्य को अपनी साधना समझते थे। हिंदी साहित्य में योगदान देने वाले श्रेष्ठ रचनाकारों में से एक थे।
4. कहानियों,नाटकों तथा कविताओं के माध्यम से हिंदी साहित्य में अपना माधुर्य बिखेरा।
5. राजनीतिक संघर्ष तथा संकट की स्थिति में राजपुरुष का व्यवहार उन्होंने बड़ी गहराई से समझा और लिखा।
6. यथार्थवादी और आदर्शवादी रचनाओं के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद जी का स्थान अद्वितीय है।
7. प्रमुख रचनाएँ -

काव्य-झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक।

नाटक-स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जन्मेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र, प्रायश्चित, सज्जन।

कहानी संग्रह-छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी. इंद्रजाल।

उपन्यास -कंकाल, तितली, इरावती।

भाषा एवं शैली -जयशंकर प्रसाद जी ने अपने काव्य लेखन की शुरुआत ब्रजभाषा में की थी।

लेकिन धीरे -धीरे वे खड़ी बोली की तरफ भी आते गए और उनको यह भाषा शैली पसंद आती गई। इनकी रचनाओं में मुख्य रूप से भावनात्मक, विचारात्मक, इतिवृत्तात्मक और चित्रात्मक भाषा शैली का प्रयोग देखने को मिलता है। तत्सम प्रधान खड़ी बोली एवं छायावाद इनकी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

© JCERT not to be republished

पाठ -परिचय

1. **आत्मकथ्य शीर्षक कविता छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है।**
2. **प्रेमचंद के संपादन में हंस पत्रिका का एक आत्मकथा विशेषांक निकलना तय हुआ। प्रसाद जी के मित्रों ने आग्रह किया कि वह भी आत्मकथा लिखें।**
3. **इसी असहमति के तर्क से पैदा हुई कविता है' आत्मकथ्य' ।यह कविता पहली बार 1932 में प्रकाशित हुई थी।**
4. **कविता में कवि अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति करते हुए संसार की असारता और नीरसता पर विचार करता है। जीवन को दुखों से भरा मानता है।**
5. **छायावादी शैली में लिखी गई इस कविता में जयशंकर प्रसाद ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव -पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है।**
6. **जयशंकर प्रसाद ने सुंदर एवं नवीन शब्दों एवं विम्बों का प्रयोग किया है।**
7. **शब्दों एवं चित्रों के सहारे उन्होंने बताया है कि उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे महान और रोचक मानकर लोग वाह-वाह करेंगे।**
8. **इस कविता में एक तरफ कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी तरफ एक महान कवि की विनम्रता भी।**

काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या

काव्यांश 01

मधुप गुन — गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,

मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।

इस गंभीर अनंत — नीलिमा में असंख्य जीवन — इतिहास

यह लो,करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य -मलिन उपहास

तब भी कहते हो — कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।

तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागर रीती।

किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले—-

अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

शब्दार्थ-

मधुप -	भौंरा
अनंत -	नीलिमा -अंतहीन नीला आकाश।
व्यंग्य -	मलिन — खराब ढंग से निंदा करना।
उपहास -	हँसी
दुर्बलता -	कमजोरी।
गागर रीती -	खाली घड़ा,भावहीन मन।

© JCERT not to be republished

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आत्मकथ्य' से अवतरित है। इस कविता में कवि ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या– कवि कहता है कि हे मन रूपी भौंरे! तू गुनगुनाकर न जाने अपने मन की कौन सी कहानी कह जाता है? घनी पत्तियाँ मुरझाकर जमीन पर गिर रही हैं अर्थात् कवि के जीवन की इच्छाएँ उचित वातावरण के अभाव में पूरी नहीं हो रही हैं। एक- एक करके जीवन के सभी खुशियाँ दूर जा रहीं हैं ।कवि के अनुसार, यह नीला आकाश जो कि अनंत तक फैला हुआ है, उसमें असंख्य लोगों ने अपने जीवन का इतिहास लिखा है।ऐसा करके वे लोग अपना उपहास करते रहते हैं ।मेरा जीवन अभाओं एवं दुर्बलताओं से भरी है हे मित्रों!तुम लोग मेरी कहानी सुनकर।सुख पाओगे?मेरा मन खाली गागर के समान है जिसमें कोई भाव नहीं है ।कहीं तुम्हारा मन भी तो मेरी तरह खाली नहीं हैऔर तुम मेरे भावों द्वारा अपने मन के खालीपन को भरना चाहते हो अर्थात् ऐसा तो नहीं है कि मेरे खाली जीवन को देखकर तुम्हें सुख मिलेगा।

विशेष–

1. 'मधुप' में रूपक अलंकार है।
2. 'मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी' में मानवीकरण अलंकार है।
3. प्रतीकों के प्रयोग से काव्य सुन्दर बन पड़ा है।
4. छायावादी शैली है।
5. खड़ी बोली का प्रयोग है।

काव्यांश-2

यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।

भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चांदनी रातों की।

अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

शब्दार्थ–

विडंबना –	दुर्भाग्य।
सरलते –	सरल मन वाले।
उज्ज्वल गाथा –	सुख की गाथा।
प्रवंचना –	धूर्तता, धोखा।
औरों –	दूसरों।
आलिंगन –	बाँहों में भरना।

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आत्मकथ्य' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने जीवन के दुखों की मार्मिक अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या – कवि कहता है कि यह मेरी दुर्भाग्य होगी कि अपनी भूलों और लोगों के द्वारा ठगे जाने के विषय में बताकर अपनी सरलता की

© JCERT not to be republished

हँसी उड़ाऊँ। मैं अपने प्रिय के साथ बिताए जीवन के मधुर क्षणों की कहानी कैसे सुनाऊँ। वे मधुर और प्रिय बातों को याद करके मन को व्यथित नहीं करना चाहता। जिस सुख की मैं सपना देखता था वो तो मानो मेरे आलिंगन में आते-आते मुस्कुराकर भाग गया। अर्थात् मेरे जीवन में सुख कभी नहीं मिल पाया।

विशेष-

1. प्रतीकों के प्रयोग से काव्य सुन्दर बन पड़ा है।
2. छायावादी शैली है।
3. खड़ी बोली का प्रयोग है।
4. 'आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया' में मानवीकरण अलंकार है।

काव्यांश-3

जिसके अरुण — कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?

क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?

सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा ?

अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

शब्दार्थ-

मुसक्या कर -	मुस्कुराकर।
अरुण कपोल -	लाल गाल।
अनुरागिनी उषा -	प्रेम भरी भोर।
स्मृति पाथेय -	स्मृति रूपी संबल।
पंथा -	रास्ता राह।
सीवन -	सिलाई
कंथा -	गुदड़ी, अंतर्मन।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आत्मकथ्य' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने जीवन के दुखों की मार्मिक अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या- कवि अपनी प्रेयसी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि उसकी लालिमायुक्त गालों की सुंदर मतवाली छाया को देखकर ऐसा लगता था जैसे प्रेम बिखेरती उषा उदित हो रही हो अर्थात् उषा की लालिमा और रूप में मधुरताओं जाया करती थी। आज मैं उनकी यादों का सहारा लेकर अपने जीवन के रास्ते का थकान दूर करता हूँ अर्थात् उन्हीं की यादें मेरे अंतर्मन का सहारा है। मैं अपनी छोटी सी जीवन की दुखभरी कहानियाँ क्या कहूँ।तुम मेरे जीवन के भोलेपन की कथा सुनकर भला क्या पाओगे?

© JCERT not to be republished

क्या ऐसा उचित नहीं होगा कि मैं दूसरों की आत्मकथा सुनता रहूँ और खुद आत्मकथा न लिखूँ। अभी अपने जीवन की कथा कहने का समय नहीं आया है।अर्थात् मेरा दुःख अभी शांत नहीं हुआ है।

विशेष-

1. छायावादी शैली है।
2. 'थके पथिक की पंथा की' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

आत्मकथ्य प्रश्न — अभ्यास

प्रश्न 1 — कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है ?

उत्तर — कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते है क्योंकि उन्हें ऐसा नहीं लगता कि हिंदी साहित्य में न जाने कितने महापुरुषों के जीवन का इतिहास उनकी आत्मकथा के रूप में मौजूद हैं। कवि को लगता है कि उनका जीवन एक सामान्य व्यक्ति का जीवन है उनमें विशेष कुछ नहीं है जिनसे लोग प्रेरित हो सके ।लोग इन महान लेखकों की आत्मकथा को पढ़कर उनकी कमियों का मजाक बनाते हैं। कवि अपना मज़ाक नहीं बनवाना चाहते।

प्रश्न 2 — आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में अभी समय भी नहीं " कवि ऐसा क्यों कहता है ?

उत्तर — आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में ' अभी समय भी नहीं ' कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि कवि को लगता है कि उसने जीवन में अब तक कोई भी ऐसी उपलब्धि हासिल नहीं की है, जो दूसरों को बताने योग्य हो या जिससे कोई उसके जीवन से कोई प्रेरणा ले सके। तथा आत्मकथा लिखकर कवि अपने मन में दबे हुए कष्टों को फिर से याद नहीं करना चाहता है।उनका दुःख इस समय शांत है।

प्रश्न 3 — स्मृति को ' पाथेय ' बनाने से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर — ' पाथेय ' अर्थात् सहारा। स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय अपनी प्रिय की स्मृति के सहारे जीवन जीने से है। कवि की पत्नी की मृत्यु युवावस्था में ही हो गई थी। अपनी पत्नी के साथ बिताये मधुर पलों की स्मृतियाँ ही अब कवि के जीवन जीने का एकमात्र सहारा हैं। जैसे थका हुआ यात्री शेष रास्ता देखते हुए अपनी मंजिल पा जाता है वैसे ही कवि अपनी पत्नी की यादों के सहारे अपना शेष जीवन बिता लेगा। मनुष्य अपनी सुखद स्मृतियों की याद में अपना सारा जीवन व्यतीत कर सकता है।

प्रश्न 4 — भाव स्पष्ट कीजिए —

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते — आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर — प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह है कि कवि भी दूसरे लोगों के जैसा सुखमय तथा आनंददायक जीवन व्यतीत करना चाहता

© JCERT not to be republished

था। पर उसे वह सुख नहीं मिल सका जिसकी वह कल्पना कर रहा था। उसे सुख पाने का अवसर भी मिला पर वह हाथ आते — आते चला गया अर्थात् उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाने से वह सुखद जिंदगी अधिक समय तक व्यतीत नहीं कर सका।कवि इन पक्तियों के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि जीवन में सुख क्षणिक है।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर — कवि ने इन पंक्तियों में जीवन के सुखद क्षणो की अभिव्यक्ति की है। यही सुखद क्षण उसके जीवन का सहारा है। कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि उसकी प्रेयसी अत्यंत सुंदर थी। कवि अपनी पत्नी की सुन्दरता का अत्युक्तिपूर्वक वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसके गाल इतने लाल और सुंदर थे कि प्रात:कालीन सुबह भी अपना सौंदर्य बढ़ाने के लिए लालिमा इन्हीं गालों से लिया करती थी। अर्थात् कवि कहना चाहते हैं कि उनकी पत्नी के लाल — लाल गाल सूर्य की लालिमा से भी बढ़कर सुंदर थे।

प्रश्न 5 — ' उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की ' — कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर — कवि अपनी पत्नी के साथ बिताये गये मधुर पलों का जिक्र करते हुए कहना चाहता है कि चाँदनी रातों में उन्होंने अपनी पत्नी के साथ एकांत में उससे प्यार भरी मीठी बातें करते हुए, जो समय बिताया था। वे सुख के क्षण उज्ज्वल गाथा की तरह ही पवित्र है जो उसके लिए अब अपने अकेलेपन के जीवन को व्यतीत करने का एकमात्र सहारा बनकर रह गए हैं। वही मधुर स्मृतियों ही तो अब उनके जीवन जीने का एक मात्र सहारा है। उन निजी क्षणों का वर्णन वे सब के सामने कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 6 — ' आत्मकथ्य ' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर — 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(क) कविता में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

(ख) अपने मनोभावों को व्यक्त कर उसमें सजीवता लाने के लिए कवि ने सुंदर एवं नवीन शब्दों एवं बिंबों का प्रयोग किया है—-जैसे — " जिसके अरुण — कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में। अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में। "

(ग) वियोग शृंगार एवं करुण रस का सुन्दर प्रयोग है

(घ) मानवीकरण, रूपक,उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य बढ़ गया है-

जैसे —

खिल — खिलाकर, आते — आते — में पुनरुक्ति प्रकाशं अलंकार है।

मेरी मौन, अनुरागी उषा — में अनुप्रास अलंकार है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 7 — कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर —मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

अर्थात् कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था। वह उसे कभी प्राप्त न हुआ और उसका जीवन हमेशा उस सुख से वंचित ही रहा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म कहाँ हुआ ?

(a) वाराणसी (उ.प्र.) (b) इलाहाबाद (उ.प्र.)

(c) गाजीपुर (उ.प्र.) (d) दिल्ली (उ.प्र.)

उत्तर-(a) वाराणसी (उ.प्र.)

प्रश्न 2. कवि के जीवन के सारे दुःख-दर्द और अभाव अब कैसे हैं?

(a) मौन (b) अधिक

(c) कम (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) मौन

प्रश्न 3. कवि ने अपने मन को किसकी संज्ञा दी है?

(a) तितली (b) भौंरा

(c) मछली (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) भौंरा

प्रश्न 4. गहरे नीले आकाश में अनगिनत लोगों ने क्या लिखे हैं?

(a) आत्मकथा (b) कविता

(c) कहानियाँ (d) गीत

उत्तर-(a) आत्मकथा

प्रश्न 5. मुसक्या कर' का प्रयोग किस प्रकार का है ?

(a) छायावादी प्रयोग

(b) ठेठ बनारसी प्रयोग

(c) खड़ी बोली का प्रयोग

(d) अवधी का प्रयोग

उत्तर-(b) ठेठ बनारसी प्रयोग

प्रश्न 6. कवि ने' खाली घड़े' से किसकी ओर इशारा किया है?

(a) खाली घर (b) सूखी नदी

(c) असफल जीवन (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) असफल जीवन

प्रश्न 7. कितने लोगों ने अपना जीवन इतिहास लिखा है?

(a) 10 (b) 20

(c) असंख्य (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) असंख्य

प्रश्न 8. कवि को जीवन में क्या नहीं मिला ?

(a) दुःख (b) सुख

(c) यश (d) धन

उत्तर-(b) सुख

© JCERT not to be republished

प्रश्न 9. कवि अपने जीवन की सुखद स्मृति को किस रूप में देखता है ?

(a) पाथेय अर्थात् जीवन का एक सहारा

(b) दुःखी कर देने वाले पल के रूप में

(c) अपनी पत्नी के रूप में

(d) अपनी प्रेयसी के रूप में

उत्तर-(a) पाथेय अर्थात् जीवन का एक सहारा

प्रश्न 10. कविता में थका हुआ पथिक कौन है?

(a) कवि (b) कवि के मित्र

(c) कवि की प्रेमिका (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) कवि

प्रश्न 11. कवि अपनी आत्मकथा में क्या लिखने की बात कर रहे हैं?

(a) दुर्बलता (b) कुशलता

(c) सहनशीलता (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) दुर्बलता

प्रश्न 12. कवि के सरल स्वभाव के कारण किसने धोखा दिया है?

(a) प्रेमिका ने (b) मित्रों ने

(c) संबंधियों ने (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) मित्रों ने

प्रश्न 13. 'कथा' का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है ?

(a) अपने मित्रों के लिए

(b) अपने जीवन इतिहास के लिए

(c) अपने अंतर्मन के लिए

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) अपने जीवन इतिहास के लिए

प्रश्न 14. कवि ने कैसे जीवन का सपना देखते थे –

(a) दुखदायी (b) सुखी

(c) स्वतंत्र (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) सुखी

प्रश्न 15. कवि को किस कारण लोगों ने धोखा दिया?

(a) चतुर स्वभाव के कारण

(b) सरल स्वभाव के कारण

(c) दोनों क और ख

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) सरल स्वभाव के कारण

प्रश्न कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ ?

(a) 1887 (b) 1885

(c) 1889 (d) 1881

उत्तर-(c) 1889

प्रश्न 17. कवि की मौन व्यथा हृदय में क्या कर रही है ?

(a) थककर सो रही है

(b) हृदय को पीड़ित कर रही है

(c) किसी भूचाल की प्रतीक्षा कर रही है

(d) जागने का इंतजार कर रही है

उत्तर-(a) थककर सो रही है

© JCERT not to be republished

प्रश्न 18. कवि अपनी आत्मकथा लिखने के बजाय क्या करना चाहता है?

(a) रोना चाहता है।

(b) खुश रहना चाहता है।

(c) हँसना चाहता है।

(d) दूसरों की आत्मकथा सुनना चाहता है।

उत्तर-(d) दूसरों की आत्मकथा सुनना चाहता है।

प्रश्न 19. 'कंथा' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(a) कंठ (b) अंतर्मन, गुदड़ी

(c) दुख (d) पश्चाताप

उत्तर-(b) अंतर्मन, गुदड़ी

प्रश्न 20. कवि को आत्मकथा लिखने की सलाह किसने दी ?

(a) पत्नी ने (b) मित्रों ने

(c) शिक्षक ने (d) पिताजी ने

उत्तर-(b) मित्रों ने

प्रश्न 21. जयशंकर प्रसाद किस वाद के प्रवर्तक कवि थे ?

(a) छायावाद (b) प्रयोगवाद

(c) प्रगतिवाद (d) हालावाद

उत्तर-(a) छायावाद

प्रश्न 22. अंत में कवि किस निष्कर्ष पर पहुंचे?

(a) आत्मकथा लिखने के

(b) आत्मकथा न लिखने के

(c) कहानी लिखने के

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ii) आत्मकथा न लिखने के।

प्रश्न कवि ने 'मधुर चाँदनी रात' किसे कहा है?

(a) अपने जीवन की मीठी यादों को

(b) सुहावनी चाँदनी रात को

(c) आनंददायक रात को

(d) जीवन की खुशी को

उत्तर-(a) अपने जीवन की मीठी यादों को

प्रश्न 24. 'सीवन उधेड़ना' का अर्थ है-

(a) सीवन खोलना

(b) टाँके तोड़ना

(c) जीवन के रहस्य जानना

(d) सिलाई काटना

उत्तर-(c) जीवन के रहस्य जानना

प्रश्न 25. कवि ने अपनी आत्मकथा को कैसी बताया है?

(a) महान (b) प्रभावशाली

(c) भोली (d) चंचल

उत्तर-(c) भोली

प्रश्न 26. कवि किसे याद करके दुःखी था?

(a) अपने बचपन को

(b) अपने वर्तमान को

(c) अपने दुःख भरे अतीत को

(d) पारिवारिक जीवन को

उत्तर-(c) अपने दुःख भरे अतीत को

© JCERT not to be republished

प्रश्न 27. कवि अपने जीवन के किन अनुभवों को सबसे बाँटना नहीं चाहते?

(a) सार्वजनिक (b) पारिवारिक

(c) मधुर (d) निजी

उत्तर- (d) निजी

प्रश्न 28. कवि के आलिंगन में आते-आते कौन रह गया?

(a) माँ (b) पुत्री

(c) प्रेमिका (d) सुख

उत्तर-(d) सुख

प्रश्न 29. कवि का दांपत्य जीवन कैसा था ?

(a) बहुत सुखी (b) सुखी

(c) दुखी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (c) दुखी

प्रश्न 30. मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ किसका प्रतीक हैं?

(a) खुशियों का (b) उदासी का

(c) निराशाओं का (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) निराशाओं का

© JCERT not to be republished